# चतुर्थ अध्याय

# अमरकान्त की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन

## चतुर्थ अध्याय

# अमरकान्त की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन

### (क) दलित और शोषित वर्ग के चित्रण की विचार दृष्टि

"जो आपके सामने घटित हो रहा है सिर्फ वही रचना नहीं है बल्कि उसे देखकर, अपने चारों ओर देखने के बाद आपके भीतर जो घटित हो रहा है, वह रचना है।"[109] अमरकांत का उपरोक्त कथन उनकी कहानियों के संवेदनात्मक घनत्व को समझने के लिए एक सार्थक संकेत प्रस्तुत करता है। यह उनका मात्र वैयक्तिक अनुभव ही नहीं है वरन सर्जनात्मक अनुभव भी है। इसी सर्जनात्मक अनुभव की सफलतम अभिव्यक्ति उनके सम्पूर्ण रचनाकर्म विशेषतः कहानियों में हुई है।

अमरकांत नई कहानी आंदोलन से संबंधित कथाकार रहे हैं जो अपने आप में ही विविधतापूर्ण और अंतर्विरोध भरा साहित्यिक प्रत्यय है। डॉ० सुरेन्द्र चौधरी ने नई कहानी पर विचार करते हुए लिखा है कि "नई कहानी आजादी के बाद के हिंदी संसार के उस प्रसरणशील मानस की अभिव्यक्ति थी जो देश–काल के परिवर्तनों और संभावनाओं से आंदोलित होने के साथ ही साथ कहीं संशयशील और तनावपूर्ण स्थितियों से भी गुजर रहा था। "यह परिवर्तन भारतीय परिवेश में एक ओर जहां अनिवार्य कारणों से अंतर्विरोध ग्रस्त था वहाँ दूसरी ओर उसमें लगभग उन्हीं कारणों से संगत भविष्य की परिकल्पना भी शामिल थी।"[110] यहाँ यह प्रश्न स्वाभाविक ही उठता है

---

[109] अमरकांत : कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़तालय सम्पादक–रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया, इलाहाबाद प्रेस प्रकाशन–१६७७, पृष्ठ संख्या–१०७

[110] 'अमरकांत : आम आदमी की प्रतिबद्धता के लिए'– सुरेन्द्र चौधरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या–१४४–१४५

कि सुरेन्द्र चौधरी जिस प्रसरणशील मानव की बात कर रहें हैं वह मानव कौन है और उसकी आकांक्षाएँ क्या हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें अमरकांत की कहानियाँ बहुत ही मुखर रूप में देती हैं। कहना न होगा कि यह मनुष्य कोई और नहीं वरन 'आम आदमी' ही है। अमरकांत ने इसी आम आदमी को और उसके व्यक्तित्व की द्वंदात्मकता को अपनी कहानियों का केन्द्र बिंदु बनाया है। इसके अंतर्गत शुभ और अशुभ का द्वन्द, व्यष्टि और समष्टि का द्वन्द, आशा और निराशा का द्वन्द, परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द समाहित है।

समाज में जिस आम–आदमी को संघर्षरत देखा जाता है उसे साधारण रूप से लेखन में स्थान देने का कार्य अमरकांत की विशेषता रहा है। चूँकि यह आम आदमी जीवन जीने की प्रक्रिया में रहता है अतः जीवन की तमाम तरह की विसंगतियाँ, विद्रूपताएं, कुंठा, क्रोध, संत्रास एवं भय उसके स्वतःस्फूर्त विशेषण बन जाते हैं। अमरकांत ने इस आम आदमी के मनोविज्ञान को बहुत बारीकी से चित्रित किया है। कहीं उसकी जिजीविषा का प्रश्न महत्वपूर्ण है तो कहीं उसके अस्तित्व का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। आम आदमी के अधूरे सपनों, उसकी अधूरी इच्छाओं को अमरकांत उनकी तमाम कमजोरियों के साथ चित्रित करते हैं। भारतीय मध्यवर्गीय तथाकथित आदर्शों के घटाटोप में छटपटाते आम आदमी की पूर्ण संवेदना यहाँ मुखरित हुई है।

नई कहानी से संबद्ध होने के बाद भी अमरकांत की कहानियाँ बिना किसी जलसे जुलूस की सुलभ नारेबाजी के अपना संवेदनात्मक घनत्व तराशती हैं। वे सहज रूप से दिखाती हैं कि एक व्यक्तित्व संपन्न, मूल्य सजग और उत्तरदायी रचनात्मक दृ ष्टि क्या होती है। एक कहानीकार के रूप में उन्हें न किसी से जय चाहिए न किसी से पराजय वरन् उन्हें चाहिए आम आदमी का भोगा हुआ यथार्थ और उसका प्रामाणिक

जीवन। अमरकांत की कहानियों के पात्र ओढ़ी हुई बौद्धिकता के अहंकार में अपने परिवेश से कट नहीं जाते वरन उनकी सहज मानवीय संवेदनाएँ बाह्य परिस्थितिओं से टकराकर ऐसे चरित्रों को जन्म देती हैं जो हमें नितान्त निजी लगते हैं। यदि त्रिलोचन के शब्दों में कहें तो–

"पथ का वह राज–कण हूँ जिस पर छाप पगों की

यहाँ–वहाँ है, मूक कहानी सहज डगों की"[111](दिगंत)

अमरकांत की कहानियों पर ऐसे अनगिनत पगों की छाप देखी जा सकती है। अमरकांत सामान्य से विशेष की ओर, विषय से विचार की ओर दिलचस्पी लेने वाले कहानीकार हैं। इनकी कहानियों का कोई सामान्य सा विषय क्रमशः वस्तु और उसके मूल्य में बदल जाता है। एक अति सामान्य लगने वाली रचना के बीच विशिष्ट विचार या विशिष्ट जीवन मूल्य बड़े सहज ढंग से लेकर आना ही उनकी एक खास विशेषता है। वस्तुतः इसी सन्दर्भ में अमरकांत की कहानियों को देखना उचित है।

अमरकांत ने जब रचनाकर्म में प्रवेश किया तब की सामाजिक स्थिति आजादी के बाद मोहभंग की प्रतिक्रियास्वरूप देखी जा सकती है। मूलतः यह वही समय था जब द्वितीय विश्व–युद्ध के बाद तमाम अस्तित्ववादी विचारधारायें साहित्य को प्रभावित भी कर रहीं थीं। अपने अस्तित्व के लिए मनुष्य की जो जिजीविषा है उसे अतियथार्थ रूप में अमरकांत 'जिंदगी ओर जोंक' में प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी के माध्यम से अमरकांत ने मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय अंतर्विरोधों को बड़ी गहराई से प्रस्तुत किया है। इस कहानी का मुख्य पात्र 'रजुआ' है, जो तथाकथित मानव समाज में एक कुत्ते या बैल जैसा निरीह चरित्र है, जिसे जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति

---

[111] दिगंत– त्रिलोचन, पुस्तक संस्थान, कानपुर, संस्करण, पृ0 74

के लिए करुण काइयांपन करना पड़ता है। इस तरह इस कहानी में "एक साधारण चरित्र के जीने की असाधारण लालसा का मर्मस्पर्शी और कारुणिक अंकन हुआ है।"[112]

रजुआ जीवन में ऐसा आसक्त है जो सूअर की तरह भी जी सकता है–"उसके हाँथ में एक रोटी और थोड़ा अचार था और वह सूअर की भाँती चापुड़–चापुड़ खा बीच–बीच में वह मुस्कुरा पड़ता जैसे कोई बड़ी मंजिल सर करके बैठा हो।"[113] उसके जीने की यह लालसा सचमुच चौकाने वाली है। इस कहानी में लेखक ने उस मानसिकता को भी उद्‌घाटित किया है जो सोचती है 'नीच और नींबू को दबाने से ही रस निकलता है' जिसके प्रतीक हैं शिवनाथ बाबू। रजुआ को निरपराध पीटने व घर का काम करवाने के बाद भी वे इसे न्यायसंगत और सही ठहराते हैं। "यह निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। इस चोरी प्रसंग के जरिये कथाकार ने भारतीय समाज–व्यवस्था की विषमता और अछूतों तथा दलितों के प्रति सवर्णों तथा उच्च जाति के लोगों की घृणा एवं नफरत को तल्खी से चित्रित किया है। शिवनाथ बाबू के चरित्र के द्वारा लेखक ने मध्यवर्ग की घृणित सोच को बेपर्द कर दिया है। कथाकार ने आदमी के अंदर छिपे जानवर को निकाल कर रख दिया है।"[114]

समाज की नजर में रजुआ की जिंदगी में कुछ नहीं है जीने के लिए किन्तु उसे इस बात का अहसास नहीं है वह जिंदगी में जीने का रस कई प्रकार से ले सकता है। वह अजीब से हँसता है, कबीर की उल्टी–सीधी बानियाँ बोलता है, प्रचलित नारे लगाता है। मोहल्ले भर की महरियों से भौजी का रिश्ता जोड़ लेता है। कथाकार

---

[112] नई कहानी नए सवाल– सत्यकाम, अनुपम प्रकाशन –२००२, पृष्ठ संख्या– ४५

[113] 'जिंदगी और जोंक'– अमरकांत, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स–२००७, पृष्ठ संख्या– ५२

[114] नई कहानी नए सवाल– सत्यकाम, अनुपम प्रकाशन–२००२ पृष्ठ संख्या– ४६

ने रजुआ के अंदर संवेदना और स्वाभिमान भी दिखाया है, जो उसे पशु से अलग करता है। वह पगली को शरण देता है, अपनी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ती भी करता है। वह भीख नहीं मांगता, काम कर के खाना चाहता है। उसका जुझारूपन अद्भुत है अपितु इससे उसकी अमानवीय स्थिति का एहसास कम नहीं होता बल्कि वह और तीव्र हो उठती है।

जिन्दा रहने की उसकी मुक्तिहीन मजबूरी अस्तित्व को साधे रखने के एक–एक तार के टूट जाने पर भी पीछा नहीं छोड़तीं। वह रुग्ण और घिनौने शरीर को बचाने के लिए टोटके का सहारा लेता है, अपने मरने की झूठी खबर उड़ाता है। जीवन के प्रति वह गजब का आशावादी और अस्थावान है। कहने को अमरकांत ने अपने अस्तित्व के लिए लड़ते एक ऐसे पात्र की रचना की है जो अपने जीवन जीने के प्रतिमान खुद निर्धारित करता है। साथ ही गहरे अर्थ में यह कहानी भारतीय समाज की कई परतों को भी खोलती है।

रजुआ के बहाने अमरकांत ने उस वर्ग को रेखांकित किया है जो गाँव से शहर स्वप्निल सुख के लिए आता है। गाँव का गोपाल शहर का रजुआ बन जाता है। यह परिवर्तन मात्र नाम के स्तर पर नहीं होता अपितु उसके पूरे अस्तित्व को ही मिटा कर रख देता है। महानगर धीरे–धीरे मानव की मनुष्यता को टुकड़ों में निगल जाता है। कहने को रजुआ पूरे मोहल्ले का काम करता है, वह बिन पैसे का नौकर है। पर जब वह बीमार पड़ता है तो किसी के मन में उसके प्रति संवेदना नहीं होती। यहाँ रजुआ की स्थिति किसी वैश्या से कम नहीं है।

रजुआ को देखकर सत्यकाम जी को बहुराष्ट्रीय कम्पनी की तरफ दौड़ते आई० टी० आई० प्रोफेशनल और आई०आई०टी० के मेधावी छात्रों की याद आती है। जो अपना अस्तित्व, अपनी अस्मिता साथ ही आदमी होने के अर्थ को ही भूलते जाते हैं।

इनमें और रजुआ में बस ऊपरी फर्क है।

कहानी में रजुआ 'गान्ही महात्मा' के अद्भुत किस्से सुनाता है जो गांधीजी की प्रासंगिकता के साथ लोकधारा में किदवंतियों और मिथकों के निर्माण की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। रजुआ की स्थिति को देखकर कई आलोचक इसे घीसू और माधव के समकक्ष रखते हैं। घीसू और माधव शोषित हैं लेकिन भोले नहीं हैं वे भुने हुए आलू खाने के लिए एक दूसरे को धोखा देते हैं पर रजुआ का शातिरपन पगली को पटाने में देखा जा सकता है। घीसू और माधव एक नम्बर के काइयां हैं पर रजुआ का काइयांपन करुण है। रजुआ एक ऐसा पात्र है जिसकी जरूरतें इतनी कम हैं की एक अमानवीय व्यवस्था भी उसे असंतुष्ट नहीं कर सकती है। रजुआ की जिंदगी को चकमा देकर जीते रहने की अभिशप्त नियति को कहानीकार सामने लाता है। वस्तुतः कहानी का महत्व भी इसी बात में है कि रजुआ कभी भी मर नहीं सकता है क्योंकि वह एक व्यक्ति नहीं मनुष्य का आदिम स्वभाव है उसकी प्रवृत्ति है। मनुष्य की अपार जिजीविषा जो किसी भी परिस्थिति में उसे जिलाए रखती है।

आधुनिकता का पर्याय बने आज के मध्यवर्गीय समाज में किस तरह जाति व लिंग के आधार पर भेद भाव व्याप्त है 'असमर्थ हिलता हाथ' कहानी इन पक्षों को बड़ी ही मार्मिकता से उठाती है। कहने को आज हमने बहुत तरक्की कर ली है किन्तु क्या आज के समय में महिलाओं की स्थिति उस स्थिति से बेहतर है जब वैदिक समय में स्त्रियां विदुषी हुआ करती थीं। जब मातृसत्तात्मक व्यवस्था थी, जाति कर्म द्वारा निर्धारित होती न कि जन्म के द्वारा। अमरकांत बड़े ही सरल ढंग से इन प्रश्नों को इस कहानी के माध्यम से उठाते हैं। आधुनिकता की होड़ में मध्यवर्गीय समाज की वह स्थिति जो स्त्री को स्वतंत्रता तो देती पर एक सीमा तक, जहां उसके रूढ़िगत संस्कार जो उसके सामान्य बोध का अंग भी हैं और जो तर्कों से परे है, आड़े नहीं आते। वहीं

ये पित्रसत्तात्मक व्यवस्था भी उस पर तमाम पाबंदियां लगाने लगती है। अमरकांत ने इसी गड्ड–मड्ड मानसिकता को इस कहानी में उतरा है।

कहानी में मुख्य पात्र है 'मीना' और उसकी माँ 'लक्ष्मी'। दोनों ही रुढिवादी व्यवस्था में अपने सपनों का बलिदान करती हैं। लक्ष्मी साहस के आभाव में ऐसे व्यक्ति से शादी करती है जिससे वह प्रेम नहीं करती। जिससे उसके अंदर एक नकारात्मक भाव उत्पन्न होता है और वह इसी जाति और धर्म का सहारा लेकर दूसरों की भावनाओं को आहत करती है। इससे स्त्री के द्वारा संयुक्त परिवार के विघटन की समस्या एवं घर के सुख–शांति में एक अशांति व विषाद का माहौल भी फैलता है।

अमरकांत ने यह भी दिखाया है कि लक्ष्मी जब अपनी बेटी को भी उसी अवस्था में पाती है तो उसे उससे घोर ईर्ष्या होने लगती है प्रतिक्रियास्वरूप वह उस पर तरह–तरह की पाबंदियां लगाती है। किस तरह से परिस्थितियाँ ही एक स्त्री को स्त्री का दुश्मन बना देती हैं यह कहानी इस परिस्थिति को भी बड़े ही सहज ढंग से पेश करती है।

जिस समाज में 'कामसूत्र' जैसा साहित्य, अजंता एलोरा एवं खजुराहो की मूर्तिकलाएं और ताजमहल जैसी इमारत, प्रेम जैसे शाश्वत मूल्य की प्रामाणिक ऐतिहासिक विरासत हैं, उसी समाज में प्रेमियों को अनैतिक दृष्टि से देखा जाता है। यह बात इस कहानी में अपनी पूरी संवेदना के साथ उजागर हुई है। मीना का गैर ब्राह्मण लड़के से प्रेम करना ही उसके प्रति घरेलू हिंसा को बढ़ावा देता है। आज के मध्यवर्गीय परिवार की यह वास्तविक स्थिति है कि वह विजातीय बौद्धिक, सरल और श्रेष्ठ व्यक्ति से तमाम मेल–मिलाप रखता है किन्तु जब उससे रिश्ते बनाने की बात सामने आती है तो उसके वही जड़ संस्कार उसी श्रेष्ठ व्यक्ति को 'नीच' की तथाकथित संज्ञा से विभूषित करते नहीं थकते। कहानी में जब मीना का प्यार दिलीप से खुल

जाता है तो यह मध्यवर्गीय ढोंग भी खुद–ब–खुद खुल जाता है। दिलीप हर प्रकार से उस ब्राह्मण वर्ग से श्रेष्ठ है जो अपने परिवार के अंदर ही स्त्री पर तमाम पाबंदियां लगाता है तथा ओएश्रेस्थ होने का दावा करता है। यह गैर ब्राह्मण बहुत बुद्धिजीवी है जो औरतों के विषय में उदार सोच रखता है। वह स्वयं प्रेम का प्रस्ताव भी रखता है। यह समस्या कोई नई नहीं है अपितु आज तो हम अपने आस–पास इसे रोज घटित होते हुए देखते हैं। आज भी भारत में अंतरजातीय विवाह करने पर प्रेमी–प्रेमिकाओं को प्रताड़ित किया जाता है। गाँव के गाँव इसके विरोध में अमानवीयता की हद पार करने से भी नहीं चूकते, प्रेमियों की हत्या तक कर देने के बाद भी उन्हें कोई शर्मिंदगी नहीं महसूस होती। यह कहानी अप्रत्यक्ष रूप से आम आदमी की इसी मानसिकता को उजागर करती है।

अपनी स्वतंत्रता के लिए मृत्यु–शैय्या पर पड़ी अपनी माँ की मृत्यु की बात सोचना भी मीना को आत्मग्लानी से भर देता है। ये उसके सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार के संस्कार ही थे। वह माँ की सेवा में दिन–रात एक कर देती है और उसके चार साल के प्रेम की मीठी यादें बस याद बनकर उसके अंतर्मन को आश्वासन देती हैं। यहाँ मीना जैसे उस आम लड़की का रूप धरण कर लेती है जो हमें अपने आस–पास कहीं भी दिखाई दे जायेगी। अमरकांत ने मीना के मनोविज्ञान को पकड़ने की सार्थक कोशिश की है। यहाँ मीना का व्यक्तिगत द्वंद्व भी दिखाई देता है। यह द्वंद्व है प्रेम और परिवार के बीच किसी एक पक्ष के साथ होने का, एक के चुनाव का। मजबूरन मीना अपने अरमानों का गला घोंटकर दिलीप को रिश्ता तोड़ने के लिए पत्र भी लिखती है। यहाँ अमरकांत ने स्त्री की घोषणात्मक शक्ति का भी संकेत दिया है जब मीना की सहेलियां उसके उपर लगी पाबंदियों के खिलाफ आमरण अनशन की बात करती हैं।

कहानी के अंत में लक्ष्मी को मीना के चेहरे में ‘ एक पवित्र और निर्दोष जीवन

की निष्फलता' का दर्शन होता है और असमर्थ, असहाय अवस्था में मीना की सरल आत्मा को चुनौती मानकर उसे प्यार देना चाहती है, उसे बताना चाहती है कि मीना को उसके जीवन का फैसला खुद लेना चाहिए। वह अपनी अंतिम साँसें गिनते हुए जीवन की सच्चाई और मानवीय भावनाओं का सहज समर्थन करती है। लेकिन सामर्थ्य न होने की स्थिति में उसका असमर्थ हिलता हाथ' इस बात का प्रतीक बन जाता है कि मीना फिर उसी इतिहास को दोहराएगी। लक्ष्मी की तरह वह भी इस रूढ़िवादी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आत्माहुति के लिए प्रस्तुत होने की स्वीकारोक्ति करती है" कि अम्मा, माफ करो मैं वचन देती हूँ कि मैं वही करुँगी जो तुम्हारी इच्छा थी।"[115] यहाँ आम जीवन के यथार्थ पर लेखक ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी की है। आम आदमी अपनी स्थितियों की तब्दीली की तमाम कोशिशों के बाद भी असमर्थ है, वह परिस्थितियों का गुलाम बन जाता है। कुल मिलाकर कहानी का मुख्य "सवाल सिर्फ प्रेम–विवाह या अंतर्जातीय विवाह नहीं है। सवाल है मुक्ति का, आजादी का और इससे भी महत्वपूर्ण जड़वत संस्कारों को छोड़ने का।"[116] अपनी परवर्ती कहानी 'तूफान' में अमरकांत ने मीना से अलग एक और विकसित मानसिक स्थिति की नारी पात्र की रचना की है। सुमन नाम की यह लड़की अपने असमर्थ पिता के आगे अपनी नियति नहीं टेकती। वह अपने पिता को अपने प्रेम–विवाह का जो की अंतर्जातीय भी है, उसका निर्णय सुनाने में जरा भी नहीं हिचकिचाती। इस तरह हम देखते है कि अमरकांत के यहाँ आम–स्त्री के भिन्न–भिन्न चरित्र बिखरे हुए हैं। जो अपनी

---

115 'असमर्थ हिलता हाथ'– अमरकांत, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स–२००७, पृष्ठ संख्या– ४७

116 'अमरकांत की कहानियों का फलक'– डॉ० रामचंद्र, शब्दयोग, संपादक– आर० के० अग्रवाल, मार्च–२००७, पृष्ठ संख्या– ३७

परिस्थितियों से मुठभेड़ करते संघर्षशील पात्र हैं। चाहे 'रिश्ता' कहानी की अनुपमा हो या 'पक्षधर' की दिव्या। ये सभी स्त्री पात्र सामान्य हैं और सामान्य परिवेश में पली–बढ़ी स्त्रियाँ हैं, लेकिन साथ ही अपने अंदर कहीं असामान्यता और असाधारणता का अंश लिए हुए।

दोपहर का भोजन' कहानी में भी एक अलग प्रकार की स्त्री का चरित्र अमरकांत सामने लाते हैं। यह कहानी निर्मम तटस्थता के साथ एक परिवार के माध्यम से समूचे निम्न–वर्ग के पीड़क आभावों को अंकित करती है। निम्न–मध्यवर्गीय भारतीय परिवार के वे लाखों आम–आदमी यहाँ पिता–पुत्र के माध्यम से आए हैं, जो काम की तलाश में दर–दर की ठोकरें खाते हैं। यह श्रम बेचने वाला वर्ग इस देश में कितना पीड़ित और शोषित है उसका चित्रांकन सफल रूप से करते हैं अमरकांत। अमरकांत के इस आम आदमी का चित्रण सहज ही हमें प्रेमचंद के पात्रों की याद दिला जाता है। जवानी की उम्र में भी चेहरे पर झुर्रियों का अम्बार, घर की स्थिति से वाकिफ और भूख लगने पर भी यही कहना कि "अधिक खिलाकर बीमार करना की तबियत है क्या?"[117] इस अभावग्रस्त जीवन पर एक पीड़ादायी व्यंग्य है।

पूरी कथा में सभी पात्रों द्वारा एक दूसरे की वास्तविक स्थिति को जानने के बाद भी परस्पर छुपाने की कोशिश कहानी को अतिकारुणिक बना देती है। परम्परागत प्राप्त तमाम भावनात्मक सम्बन्ध–सूत्रों और उनके माध्यम से बिखरने–बिखरने आ रहे ढाँचे को कायम रखने की एक निष्फल दयनीय चेष्टा पूरे प्रसंग में नजर आती है। कहानी को सीधे–सपाट ढंग से कहने के सन्दर्भ में सुरेन्द्र चौधरी का यह कथन उल्लेखनीय है कि "दोपहर का भोजन जैसी कहानियाँ अमरकांत की कहानियों में एक

---

[117] 'दोपहर का भोजन'– अमरकांत, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स–२००७, पृष्ठ संख्या–१०२

खास स्थान रखती हैं। ऐसी कहानियों के लिए अमरकांत को बनावट की आवश्यकता नहीं होती है जो मार्मिक बनाए जाने के लिए काम में लाए जाते हैं। वातावरण और व्यक्ति के सार का अंतर्विरोध सहज ही इस कथ्य को प्रभावकारी बना जाता है। ऐसी कहानियाँ प्रेमचंद ने बड़ी सफलता से लिखीं हैं। प्रेमचंद के बाद साधारण जीवन के कथ्य पर ऐसा सहज अधिकार अमरकांत में ही मिलता है।"[118]

कहना न होगा कि बुनावट की जरूरत तो अमरकांत जी को 'हत्यारे' कहानी के लिए करनी पड़ी होगी, जो अपनी भिन्न कथन शैली के कारण उनकी कहानियों में अपनी एक अलग पहचान रखती है। यह प्रसिद्ध कहानीकार हेमिंग्वे की कहानी 'किलर्स' का अनुवाद है। पूंजीवाद के पसरते पाँव ने जिस तरह की दोमुंही, मक्कार जीवन–शैली निर्मित की उसकी बहुत सहज परिणिति अमरकांत की हत्यारे जैसी महत्वपूर्ण कहानी है। वस्तुतः आजादी से आम आदमी का जो सपना जुड़ा हुआ था , दुष्यंत कुमार के शब्दों में–'कहाँ तो तय था चिरागां हर एक घर के लिए'। वह आजादी के बाद टूट जाता है–'कहाँ एक चिराग भी मयस्सर नहीं शहर के लिए'। यह कहानी उसी विकृत समाज को बड़ी बेबाकी से प्रस्तुत करती है। तथाकथित सभ्य समाज के बदले हुए दोगले रूप को बड़े ही सामान्य ढंग से पेश किया गया है।

'हत्यारे' एक प्रतीक हैं उस व्यवस्था की हत्या के जो स्वाधीनता आंदोलन के समय एक 'यूटोपिया' की भांति भारतीय मानस में थी। समाज में ये तत्व कोई एक या दो नहीं हैं बल्कि एक पूरी की पूरी पीढ़ी मौजूद है यहाँ। इस कहानी के व्यापक सन्दर्भ में डॉ० नामवर सिंह लिखते हैं–"सामान्य सी घटना, साधारण लोग। न मृत्यु का भयावह चित्रण और न चरित्रों में किसी महत्व का आरोप! किन्तु आभाषित होने वाली

[118] 'अमरकांत : आम आदमी की प्रतिबद्धता के लिए'–सुरेन्द्र चौधरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या– १५०

साधारणता के तल में एक ओर मृत्यु है ओर दूसरी ओर निरावरण निहत्था मानव! दोनों अपने असली और नग्न रूप में आमने–सामने! मृत्यु से भी भयानक क्या यह आत्मबोध नहीं है? कौन है जिसमें इस आत्मबोध तथा असहायता के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न न होगी! इस विषाक्त वृत्त से मुक्त होने की यह उत्कट आकांक्षा कहाँ कहानी का विषय और कहाँ कहानी का विचार ! कहानी किसकी है ? हर मानव की या एक मानव दल की, जिसने इस सामजिक व्यवस्था के अंदर एक खासपेशा अपना लिया है?"[119]

अमरकांत एक ऐसे रचनाकार हैं जो विषय से नीचे उतरकर अथवा ऊपर उठाकर किसी जीवंत सत्य को पकड़ने की कोशिश करते हैं। हत्यारे इसी प्रक्रिया की प्रामाणिक अनुभूति है बदलते समाज में कैसे परिस्थितियाँ अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को निगल रही हैं। यहाँ युद्ध सीधे–सीधे नहीं अपितु शीत युद्ध है। यहाँ साम्राज्यवाद सीधे नहीं मानसिक रूप से हमें गुलाम बनाए हुए है। "यह हत्या कोई चीख–पुकार–सनसनी पैदा नहीं करती अपितु यह हत्या है हमारे मूल्यों की। ये हत्यारे किसी व्यक्ति के हत्यारे नहीं हैं, वे सम्पूर्ण मानवीय विवेक, निर्णय क्षमता, और जीवन मूल्यों के हत्यारे भी हैं।"[120] और जो व्यवस्था उन्हें शरण देती है इससे भिन्न वह भी न कुछ हो सकती है और न है। अपनी अन्य कहानियों में भी अमरकांत इन हत्यारों की भिन्न–भिन्न तस्वीर पेश की है जो 'गगन बिहारी' कहानी भी इन्हीं हत्यारे युवकों का चित्र पेश करती है। 'पलाश के फूल' कहानी के राय साहब भी इन्हीं पात्रों की तरह स्वार्थी तथा आत्मकेंद्रित वर्ग के प्रतीक हैं।

---

[119] कहानी नयी कहानी– डॉ० नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन–२००६, पृष्ठ संख्या– १२२

[120] 'अमरकांत के बहाने हिंदी कहानी पर बातचीत' : मधुरेश, आलोचना, संपादक– नामवर सिंह, अप्रैल–जून–१९७७, पृष्ठ संख्या–११०

इन्हीं हत्यारों के चलते आज के आम–आदमी का अथक परिश्रम 'डिप्टी कलक्टरी' के पद के लिए, व्यर्थ चला जाता है। डिप्टी कलेक्टरी अमरकांत की पुरस्कृत कहानी है, जिसे आजादी से हुए मोह–भंग की स्थितियों की कहानियों के समकक्ष रखा जाता है। यह निम्न–मध्यवर्गीय उस मानसिकता को उजागर करती है जो अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने का सपना डिप्टी कलेक्टरी का पद पाने में देखता है। देश के लाखों युवक इस सपने को लिए गाँव से शहर की ओर पलायन करते हैं। इस कहानी के माध्यम से अमरकांत ने इस वर्ग की मानसिकता की कई परतों को खोला है। यह वर्ग जितना अपने कर्मों पर विश्वास रखता है, उतना ही भाग्यवादी है। इस आशा–निराशा के झूले में झूलते बाप–बेटे का द्वंद्व भी सामने आता है। सर्वप्रथम तो शकलदीप बाबू अपने निकम्मे बेटे की कटु आलोचना करते हैं और उसके डिप्टी–कलक्टरी के सपने का मजाक उड़ाते हैं। और बाद में अपने पुत्र को अध्ययनरत् पाकर स्वयं उसके इस लक्ष्य में पूरी जी जान से सहायता करते हैं। शकलदीप बाबू का यह करना जितना अस्वाभाविक लगता है, असल जीवन में यह उतना ही स्वाभाविक है।

इस कहानी में कथाकार ने असफल युवकों के पीछे कुछ उनकी नैतिक कमजोरी, कुछ व्यवस्थागत भ्रष्टाचार दोनों ओर संकेत किया है। साथ ही शकलदीप बाबू के गहरे मनोविज्ञान को छूने की सार्थक कोशिश है। इस कहानी के सामाजिक सरोकार की बात न भी हो तो भी यह आम आदमी के संवेदनात्मक घनत्व को पूरी भावुकता के साथ उजागर करती है। "'डिप्टी–कलक्टरी' किसी समाज की उपलब्धि न हो तो भी उसके साथ जुड़ी बाप की महत्वकांक्षाएं एक बारगी ही अप्रासंगिक नहीं हो

जातीं।"[121]

अमरकांत की कहानियों में जो आम–आदमी की सम्वेदना है वह अपने बड़े मार्मिक रूप में 'मौत का नगर' कहानी में दिखाई देती है। यह कहानी सांप्रदायिक दंगों से होने वाली आम जीवन की परेशानियों को बड़े क्रूर रूप में उठाती है। अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए बड़े–बड़े राजनीतिक कार्यकर्ता इन दंगों को हवा–पानी देते हैं और परेशान होता है आम–आदमी जिसके रोजमर्रा के जीवन में न जाने कितनी जरूरतें बिना किसी भेद–भाव के ही पूरी होती हैं। अमरकांत अपनी इस कहानी के माध्यम से यही दिखाना चाहते हैं कि किस प्रकार यह दंगे एक दूसरे धर्म के प्रति भेद–भाव उत्पन्न करते हैं। सिर्फ इस आधार पर कि रिक्शे में बैठा दूसरा आदमी मुसलमान है राम का सारा शरीर सुन्न पड़ जाता है। अमरकांत ने इसी संवेदना को पकड़ने के लिए परिस्थितियों का वर्णन बड़ी सतर्कता से किया है। जिससे हिंसक वातावरण की अंदरूनी प्रतिक्रियाएं सामने आती हैं। मुख्यतः अमरकांत की कहानियाँ युग के मुख्य सामाजिक अंतर्विरोध की खरी और बेलौस तस्वीर प्रस्तुत करती है। अपने समय के निम्न–मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थवादी संवेदना की जीवंत और सार्थक दस्तावेज हैं अमरकांत की कहानियाँ। इन कहानियों के बारे में जब राजेन्द्र यादव यह प्रश्न उठाते हैं कि "अमरकांत का शायद ही कोई पात्र अपनी नियती या स्थिति को बदलने की बात सोचता या करता हो? जहां–जहां ऐसा है वहाँ उठे हुए उबाल की तरह फौरन ही ठंडा हो गया है। मैं आजतक तय नहीं कर पाया कि 'जिंदगी और जोंक' जीवन के प्रति आस्था की कहानी है या जुगुप्सा, आस्थाहीनता और डिस्गस्ट्

[121] 'अमरकांत : आम आदमी की प्रतिबद्धता के लिए'– सुरेन्द्र चौधरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या– १४७

की"[122] तब मुझे आम–आदमी की अपनी नियती को स्वीकार करने की दुष्यंत कुमार की ये पंक्तियाँ याद आती हैं–

"न हो कमीज तो पावों से पेट ढँक लेंगे।

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।"

वस्तुतः यही आम–आदमी की नियति भी है। यदि उसकी स्थिति में सुधार हो सकता तो वह आम नहीं खास होता। अमरकांत के पात्र इसी आम संवेदना से संपृक्त हैं।वास्तव में आज का आम–आदमी अमरकांत की कहानी 'मौत का नगर' का ही नागरिक है जहां वह अपने अस्तित्व के लिए 'जिंदगी से जोंक' की तरह चिपका है। जिंदगी जीने की इसी जद्दोजहद कोशिश में वह 'दोपहर का भोजन' भी पेट भर नहीं पाता। अपने लिए चैन और सुकून की तलाश में वह एक ऐसा 'मकान' भी नहीं खोज सकता जहां वह आराम से जी सके।

उस जैसे कुछ लोग मिलकर यदि 'बस्ती' बना भी लेंगे तो यह व्यवस्था उसे स्वीकार नहीं कर सकती। जो सही और गलत में 'फर्क' करना नहीं जानती। इस नगर में एक तरफ 'डिप्टी–कलक्टरी' का सपना देखने वाला आम–आदमी भी है तो बिना घोड़े पर चढ़े घुड़सवारी की बड़ी–बड़ी डींगें हांकने वाला 'घुड़सवार' भी है। जहां 'गगन–बिहारी' जैसे पात्र भी हैं और 'मूस' जैसा जीवन व्यतीत करने वाले पात्र भी हैं।

साथ ही इस व्यवस्था को कायम करने में सबसे ज्यादा योगदान दिया है मानव–मूल्यों के उन 'हत्यारों' ने जो दोगले चरित्र के साथ बहुसंख्य रूप में 'पलाश के फूल' की तरह खिले हुए हैं और इन्हें ही 'देश के लोग' की स्वीकारोक्ति भी प्राप्त है।

---

[122] अमरकांत : कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़तालय पूर्वोक्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या– १८७

अपनी पूरी सच्चाई जानने के बाद भी अपनी स्थिति को बदलने में इस आम–आदमी का 'हाथ असमर्थ' है।

आज कवि जब यह प्रश्न उठता है कि–

"कोई किसी की तरफ है

कोई किसी की तरफ

कहाँ है कोई आज आदमी की तरफ"

तो हम बेझिझक कह सकते हैं कि अमरकांत अपनी पूरी संवेदना के साथ इसी आदमी की तरफ हैं।

## (ख) समाज के विभिन्न सम्बन्धों में प्रस्तुत दृष्टिकोण

आलोचकों द्वारा अब तक नई कहानी में कहानी–त्रयी के रूप में जिन तीन नामों (मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव) की चर्चा करते हुए इसे सीमित दायरे में बांधकर देखा जाता रहा है, वह कहीं न कहीं एकांगी दृष्टिकोण का परिचायक है। इसी दौर में, प्रेमचंद की परंपरा से आने वाले ऐसे कई महत्त्वपूर्ण रचनाकार (अमरकांत, शेखर जोशी, मार्कण्डेय, भीष्म साहनी, रेणु आदि) हुए जिन्होंने न सिर्फ कहानी विधा को समृद्ध किया बल्कि उसे नई दिशा एवं गति प्रदान करने में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है बावजूद इसके नई कहानी की चर्चा के क्रम में वे हमेशा हाशिये पर ही रहे । इनमें एक प्रमुख नाम अमरकांत का भी आता है। निश्चित रूप से अमरकांत की रचनाशीलता का दायरा बहुत ही व्यापक है। उन्होंने लगभग दस उपन्यास एवं सवा सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। यहाँ मैं अमरकांत की कुछ चर्चित कहानियों के आलोक में उनकी जनपक्षधरता, प्रतिबद्धता एवं महत्त्व को रेखांकित करने की कोशिश करूंगा।

अमरकांत मुख्यतः स्वतंत्र भारत के जटिल यथार्थ और द्वन्द्वों से घिरे समाज के

जीवन–व्यापार और उसमें निर्मित हो रहे किरदारों को अत्यंत सहजता से पेश करने वाले रचनाकार हैं। अमरकांत की रचनाशीलता की सबसे प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपनी रचनाओं के लिए वही भूमि चुनी जिसमें वे जी रहे थे। स्वाधीनता के बाद संयुक्त परिवारों का विघटन, आर्थिक बदहाली, देश–विभाजन, बेरोजगारी, संत्रास, कुंठा, भ्रष्टाचार एवं अवसरवादिता जैसी तमाम अराजक स्थितियों के गहराने से जनता के मन में असंतोष एवं मोहभंग जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होने लगी थी। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी सुविधाओं के न मिलने से आजादी के बाद आम आदमी का मन एवं उनके संजोएं हुए सपने टूटने लगे थे। ऐसी निराशा के बीच अमरकांत ने इसी यथार्थ को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा।

मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय समाज का चित्रण, शोषण के शिकार पात्रों की चारित्रिक जटिलता, मनोवैज्ञानिकता, विसंगतिबोध (एब्सर्डिटी), स्त्री–शोषण आदि जैसे विषय अमरकांत की रचनाओं  के केंद्र में हैं। 'जिंदगी और जोंक' अमरकांत की सर्वाधिक चर्चित एवं महत्त्वपूर्ण कहानी है। देखा जाय तो कहानी के शीर्षक से ही यहाँ बहुत सारी चीजें स्पष्ट हो जाती हैं। कहानी के मुख्य पात्र रजुआ के माध्यम से एक संघर्षरत आदमी के जीवन एवं उसकी जिजीविषा को रेखांकित करते हुए अमरकांत ने सामंती व्यवस्था की अमानवीयता एवं मूल्यहीनता पर गहरा प्रहार किया है। रजुआ समाज द्वारा हर प्रकार से शोषित है। चोरी का झूठा आरोप लगाकर लोग उसे पीटते हैं। मनमाना काम लेकर उसे गैर वाजिब मजदूरी देते हैं। रजुआ अपनी कमाई के जो भी दस–पाँच रूपए जमा किया रहता है अंततः वह भी उसे वापस नहीं मिलता है। कहानी में उद्धृत यह लोकोक्ति ही – 'नीच और नीबू को दबाने से ही रस निकलता है' पूरे समाज की मानसिकता एवं अमानवीयता की कलई खोल देती है। रजुआ की पीड़ा, केवल जीवन जीने की पीड़ा नहीं है बल्कि आज की सामान्य जिंदगी के समाजीकरण

की पीड़ा है।

अमरकांत कहानी की यथार्थवादी परंपरा के सिद्धहस्त रचनाकार हैं। इनकी कहानियों में जिंदगी की अचूक पकड़ है। यही कारण है कि इनकी कहानी के पात्रों का वास्तविक जीवन से गहरा मेल बैठता है। 'हत्यारे' अमरकांत की बहुचर्चित कहानियों में से एक है। यह मुख्य रूप से स्वाधीन भारत में नौजवानों की स्थिति पर लिखी गई अद्भुत कहानी है। इस कहानी का वैशिष्ट्य अन्य कहानियों के बरक्स पूर्णतया भिन्न है। 'हत्यारे' कहानी के पात्र मोहभंग से उत्पन्न विकृति एवं मूल्यांध मानसिकता के प्रतीक पात्र हैं। इस कहानी के केन्द्रीय पात्र दो युवक हैं जो संवेदनशून्य समाज के अद्भुत नमूने हैं। यह पात्र मुख्य रूप से वर्तमान युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं जो न सिर्फ एक व्यक्ति की हत्यारे हैं बल्कि विवेक शून्य जीवन–मूल्यों के भी हत्यारे हैं। यह कहानी मूलतः वर्तमान समय में युवा पीढ़ी के मानसिक विघटन एवं कुंठित व्यक्तित्व को रेखांकित करती है।

'डिप्टी कलक्टरी' अमरकांत की बहुचर्चित कहानी है। काबिलेगौर है कि अमरकांत की कहानियों के निम्न मध्यवर्गीय पात्र जीवंट, संघर्षशील व जिजीविषा से लैस हैं। तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद शकलदीप बाबू अपने कर्तव्यों से नहीं चूकते हैं बल्कि उससे जूझते हुए संघर्ष करते हैं। वह कर्ज लेकर अपने लड़के नारायण को डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा में शामिल करवाते हैं। उन्हें ईश्वर और भाग्य को छोड़कर किसी पर विश्वास नहीं है। वे मंदिर जाते हैं। ईश्वर को प्रसाद चढ़ाकर मन्नत भी मानते हैं। बेटे को प्रसाद देते वक्त यह भी कहते हैं कि – "बेटा इसे श्रद्धा से खा लेना, भगवान शंकर का प्रसाद है।" गौरतलब है कि आर्थिक कठिनाइयों से जर्जर शकलदीप बाबू यहाँ भाग्यवादी हो उठते हैं। नारायण को कठिन परिश्रम करते देखकर वे प्रसन्न अवश्य होते हैं पर उसके सफल होने का भरोसा उन्हें बिल्कुल नहीं है।

कहानी के अंत तक जाते–जाते शकलदीप बाबू के सारे सपनों पर अंततः पानी फिर ही जाता है। दरअसल स्वतन्त्रता संग्राम ने देश की पीड़ित जनता के मन में यह स्वप्न जगा दिया था कि स्वाधीनता के बाद हम सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से पूर्णतः स्वतंत्र होंगे, हमारी सारी विपन्नताएँ दूर होंगी, वे सारे के सारे सपने धरे के धरे रह गए इसी मोहभंग की एक सूक्ष्म तस्वीर अमरकांत ने अपनी इस कहानी में खीचने की कोशिश की है।

आजादी के बाद हिन्दी कहानी में नई कहानी का जो आंदोलन उभरा उसमें स्वातंत्र्योत्तर काल की मोहभंग की स्थिति तथा संत्रास मुखरित हुआ है। इसके आलोक में अमरकांत अपनी रचनाओं में हर प्रकार के छद्म, ढोंग, सामाजिक विसंगतियों और परिवेशगत अंतर्विरोधों की पड़ताल करते हुए एक बेहतर समाज रचना के लिए लेखक की सक्रिय भूमिका और साझेदारी की बात करते दिखाई देते हैं। इनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि में सहज मानवीय यथार्थवादी संवेदना है जो बगैर किसी कलात्मकता के पाठकों को अभिभूत कर देती है। नई आर्थिक परिस्थितियों से संघर्ष करता मध्यवर्गीय समाज उसकी यातनाओं एवं जीवन की भूख का जैसा हृदयस्पर्शी चित्रण अमरकांत ने किया है, वह हिन्दी कथा साहित्य में अप्रतिम है। अमरकांत ने अपनी रचनाओं में सीधे–सपाट वर्णन करने की उस शैली का प्रयोग किया है जिसे हम प्रेमचंद की परंपरा अथवा उसकी अगली कड़ी के रूप में देख सकते हैं। उन्होंने सामाजिक विसंगतियों, विडंबनाओं एवं अंतर्विरोधों को जैसा देखा व महसूस किया उन्हें अपनी कहानी की घटनाओं, स्थितियों व पात्रों में मूर्त करके ठीक उसी प्रकार से वास्तविकता को पारिभाषित किया है। इस संदर्भ में यहाँ अमरकांत की चर्चित कहानी 'दोपहर का भोजन' का उल्लेख करना बेहद समीचीन है। इस कहानी में जिस निर्ममता एवं बारीकी के साथ समूचे निम्न मध्यवर्गीय परिवार के त्रासद अभावों को अंकित किया

गया है वह अपने समय सापेक्ष प्रासंगिक होने के नाते आज भी इस कहानी का ऐतिहासिक महत्व है। इस वर्ग के पात्रों में सहनशीलता तथा भविष्य के प्रति आशा देखने को मिलती है। कहानी में रामचंद्र अपनी माँ सिद्धेश्वरी से वर्तमान स्थिति के सुधरने की आशा व्यक्त करते हुए कहता है– "समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।" कहानी की स्त्री पात्र सिद्धेश्वरी आर्थिक विपन्नता की स्थिति में भी परिवार की हिम्मत बंधाती रहती है। उन्हें  मानसिक रूप से टूटने नहीं देती। एक प्रकार से देखें तो 'दोपहर का भोजन' कहानी मूलतः अमानवीय व्यवस्था के प्रति तीखा व्यंग्य है।

अमरकान्त अपनी कहानियों में वस्तु विन्यास को इतने सहज ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि वह आम पाठक तक पूरी तरह संप्रेषित हो सके। जिस प्रकार से उनकी कहानियों की भाषा बेहद सहज और सरल है उसी प्रकार शिल्प–विधान भी अनगढ़ एवं सहज प्रतीत होता है। उनकी कहानियों के शिल्प की सबसे बड़ी खूबी उनकी अनुभूतिगत सच्चाई और सरलता है। गौरतलब है कि अमरकान्त ने कथानक या व्यंग्य की सहज कला की रोचकता को नई रोचकता के साथ प्रस्तुत किया। अमरकांत की 'बस्ती', 'मूस, कुहासा, 'नौकर','लड़का–लड़की' एवं 'पलाश के फूल' जैसी तमाम ऐसी कहानियां हैं जो न सिर्फ स्वाधीन भारत की विसंगतियों एवं विडंबनाओं की तस्वीर पेश करती हैं बल्कि मौजूदा समाज–व्यवस्था पर गहरा प्रहार भी करती हैं।

जाहिर है, अमरकान्त की कहानियों का फलक अत्यंत विस्तृत है और वह लेखक के परिवेश से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। अमरकांत उन रचनाकारों में से एक हैं जिनकी कहानियाँ न सिर्फ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ हैं अपितु हमारे समय एवं समाज का प्रामाणिक दस्तावेज है।

## अमरकान्त की विचारधारा

अमरकान्त एक ऐसे जनवादी लेखक हैं, जो अपनी कहानियों के लिए सारा जरूरी हवा पानी ज़िंदगी से सीधे लेने में विश्वास करते हैं। नई कहानी के दौर में जब अधिकांश कहानीकार साहित्य में काव्य की भाँति बिंब संकेत तथा संगीत के राग तलाश रहे थे तब अमरकान्त ने इसकी परवाह न करते हुए बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त की। इनकी कहानियों में यथार्थ की गहरी पकड़ है। वे अतीत को नकारकर अपने समय और परिवेश को गहराई से पकड़ती हैं। ''अमरकान्त का रचनाकार यह अच्छी तरह से जानता है कि कहानी दरअसल होती क्या है। वह विचार भर के लिए कहानी नहीं लिखते और कला भर के लिए कलम उन्होंने कभी चलाई नहीं। वह मानते हैं कि हर रचना में कोई न कोई विचार होता है, चाहें जितनी होशियारी से 'कलाकारी' की गई हो। उनकी रचनाएँ इसीलिए अपने समय की विशेष पहचान बन सकीं हैं। वह स्वांतत्र्योत्तर भारत के नागरिक की आत्मा के कथाकार हैं। वह बगैर शोर किए आम आदमी की कहानी लिखते रहे। आलोचकों ने चाहे कितने बड़े कथाकार खड़े कर दिए हो, लेकिन ज़िदंगी को समझते हुए उसकी सम्यक् आलोचना अमरकान्त जैसे कथाकार ही कर सके।''[123]

अमरकान्त अपने परिवेश से कितना जुड़े हुए हैं यह उनके रहन-सहन, बात व्यवहार से तो स्पष्ट होता ही है, मौके-बेमौके इसकी गहरी रंगत इनकी कहानियों में देखने को मिल जाती है–''कम लोग जानते होंगें कि अमरकान्त को डायरी लिखने का शौक पहले से था। उनकी एक डायरी में एक इंटरव्यू का विस्तार से ज़िक्र था। इस

---

[123] आजकल, सम्पादक– राजेन्द्र भट्ट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, अप्रैल-2014, पृष्ठ–6

इटंरव्यू में अमरकान्त खुद शामिल हुए थे। इसी पर आधरित उनकी सजग-सचेत लेखन की पहली कहानी 'इटंरव्यू' लिखी गई।''[124] 1953 में लिखी यह कहानी अपने समय की मूल धारा को अतिक्रमित करती है और रोजगार के अवसरों की सीमितता के साथ प्रशासनिक क्षेत्र में घुस आए भ्रष्टाचार की ओर संकेत करती है। अपने उद्देश्यगत संदर्भों में यह कहानी लोकतांत्रिक संस्थाओं के क्षरण के इस युग में आज भी प्रासंगिक है।

प्रायः कथा आंदोलनों से दूर रहकर नित नये बनते बिगड़ते कथा-शिल्पों से सहज ढंग से अपने चारों ओर के यथार्थ को समझने की चेष्टा आदि विशेषताएँ अमरकान्त को अपनी पीढ़ी के ही नहीं बल्कि बाद के भी अनेक चमत्कार प्रिय लेखकों से अलग कर देती है। अमरकान्त ने खुद को प्रसिद्ध कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त करने की इच्छा से कहानियाँ नहीं लिखीं बल्कि उन्होंने अपनी कहानियों में 'विचार' को तथा 'जीवन-मूल्य' को प्रमुखता दी।

## वर्ग की अवधारणा

भारतीय समाज में वर्ग की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझना कठिन कार्य है। सामान्यतः यह समझा जाता है कि वर्ग वह समूह है जिसके सामान्य कार्य और बाजार की स्थितियों में बराबरी की भागीदारी होती है। हमारे समाज में मनुष्य को आर्थिक और सामाजिक आधार पर कई दृष्टियों से विभाजित करके देखा जाता है। हिंदी साहित्य में 'वर्ग' शब्द मार्क्सवादी जीवन-दर्शन की देन है। डॉ0 अमरनाथ 'वर्ग' को परिभाषित करते हुए लिखते हैं–''सामान्य रूप से 'वर्ग' समाज के उन समूहों को

---

[124] आजकल, सम्पादक– राजेन्द्र भट्ट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, अप्रैल-2014, पृष्ठ–6

कहते हैं, जिनमें आर्थिक आधार पर स्तर भेद होता है।''[125]

वर्ग आज की पूँजीवादी औद्योगिक व्यवस्था के प्रमुख समूह हैं। साधारण रूप से वर्ग का विभाजन उत्पादन के साधनों पर व्यक्ति के स्वामित्व के आधार पर होता है। आदिकाल से ही हमारे समाज में वर्ग की यह अवधारणा रही है। बहुसंख्यक समाज में सभी लोग एक ही श्रेणी के नहीं हो सकते, क्योंकि सभी मनुष्यों में कर्म, गुण तथा व्यवहार में भिन्नता दिखाई देती है। प्राचीन काल में उत्पादन के साधनों का इतना विकास नहीं हुआ था, जब हमारा समाज स्वामी और दास इन दो वर्गों में विभक्त था। इस प्रकार के विभाजन में आर्थिक स्तर से एक वर्ग धन संपन्न रहा है और दूसरे वर्ग के पास इन सुविधाओं का अभाव रहा है। यह दूसरा वर्ग अपनी आजीविका के लिए पहले वर्ग पर ही निर्भर रहता है चाहे वह स्वामी और दास की व्यवस्था हो, जमींदार और मजदूर की, चाहे राजा और प्रजा की व्यवस्था हो। लेकिन पूँजीवाद के विकास के साथ ही उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के मध्य एक वर्ग का और उदय हुआ जिसे मध्यवर्ग के नाम से जाना गया। इस प्रकार वर्ग को तीन भागों में बाँटा जाता है–

(1) उच्चवर्ग

(2) मध्यवर्ग

(3) निम्नवर्ग

**उच्चवर्ग**

उच्चवर्ग के अंतर्गत बड़े-बड़े व्यापारी, अफसर, ठेकेदार, पूँजीपति, राजनेता तथा जमींदार आते हैं, जिनका मुख्य ध्येय किसी भी प्रकार धन-संचय करना होता है। इस

---

[125] हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, डॉ0 अमरनाथ, पृष्ठ–322

वर्ग का व्यक्ति आर्थिक रूप में संपन्न होता है तथा सुख सुविधाओं का उपभोक्ता है। उच्चवर्ग ऐसा वर्ग है, जिसकी दृष्टि में इस देश की जनता का कोई अस्तित्व ही नहीं है, ऐसा वर्ग केवल अपना हित चाहता है। यह वर्ग अपने से निचले वर्ग के लोगों का शोषण करता है। उच्चवर्ग अधिक से अधिक शक्तिशाली होने के लिए समाज में जमाखोरी, मिलावट, रिश्वत, भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक कार्य करता है।

**मध्यवर्ग**

उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच में एक वर्ग है, जिसे मध्यवर्ग के नाम से जाना जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत सरकारी सेवा में लगे उच्च अधिकारी, बुद्धिजीवी, दुकानदार आदि लोग आते हैं। मध्यवर्गीय व्यक्ति विलासितापूर्ण जीवन का आदी होता है, अवसरवादी होता है।

हिन्दी साहित्यकोश के अनुसार "मध्यवर्ग सामंतवादी व्यवस्था में पाया नहीं जाता था, क्योंकि उस समय जमींदार और किसान का संबंध सीधा था, किंतु पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई, जो इस जटिल व्यवस्था के संगठन सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी, पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतया बुद्धिप्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रांति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है।"[126]

**निम्नवर्ग**

निम्नवर्ग में वे लोग आते हैं, जिनकी आय का कोई निश्चित साधन नहीं होता, ऐसे लोग प्रायः मजदूरी करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं। मजदूरी की भी कोई

---

[126] हिन्दी साहित्य कोश-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, धीरेन्द्र शर्मा, पृष्ठ–564

निश्चितता नहीं होती, ऐसे लोगों का भोजन भी उनकी प्रतिदिन की मजदूरी पर ही निर्भर करता है। समाज में सबसे अधिक शोषण भी इसी वर्ग का होता है। उच्च तथा मध्य दोनों ही वर्गों में इस वर्ग का शोषण किया जाता है। निम्न वर्ग समाज का सबसे अधिक शोषित एवं पिछड़ा वर्ग है। निम्न वर्ग के अंतर्गत समाज का वह हिस्सा आता है, जो संपूर्ण जीवन उच्च वर्ग तथा उच्च मध्यवर्ग की सेवा में व्यतीत कर देता है। पूँजीवादी व्यवस्था में यह वर्ग शोषित वर्ग कहलाता है। यह उत्पादक वर्ग होता है, परन्तु स्वयं द्वारा उत्पाद की हुई वस्तुओं का उपभोग करने में यह असमर्थ होता है। इस वर्ग के अंतर्गत मिलों, कारखानों में काम करने वाले मजदूर, दफ्तरो, होटलों तथा अन्य संस्थानों में कार्यरत नौकर-चाकर, कम आय वाले सरकारी कर्मचारी आदि आते हैं। इस वर्ग में अधिकांशतः अशिक्षा पाई जाती है। जिसके कारण इस वर्ग के सदस्य अंधविश्वास, रूढ़ियों एवं पुरानी मान्यताओं में जकड़े रहते हैं।

## अमरकान्त की वर्गीय दृष्टि

वर्ग प्रत्येक समाज का अनिवार्य अंग होता है। मानव समाज की कल्पना के साथ ही साथ हमारे मस्तिष्क में वर्गों का स्वरूप उभरता है। 1950 के बाद के कथाकारों में अमरकान्त का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने अपनी कहानियों में समाज की उन परिस्थितियों को पकड़ा है जिनके कारण आज का समाज वर्गों में विभक्त होकर दारूण जीवन जी रहा है। ''वर्ग चरित्रों और उनके मनोवैज्ञानिक समझ के क्षेत्र में अमरकान्त की गहरी रूचि है।''[127] अमरकान्त अपनी कहानियों में प्रायः सामाजिक और राजनैतिक चेतना के स्तर पर जागरूक चिंतन के कारण अपनी कहानियों में प्रायः सामाजिक विषमता की ओर संकेत करते हैं।

[127] कहानी की बात, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014 मार्कण्डेय, पृष्ठ–34

साहित्य मनुष्य के हित में वर्गवादी दृष्टि अपनाता है, वर्ग चेतना की हिमायत करता है और वर्ग संघर्ष को प्रखर करने की बात करता है ताकि एक वर्गहीन समाज व्यवस्था की सृष्टि संभव हो सके। अमरकान्त की कहानियों में समाज के प्रत्येक वर्ग को सम्मिलित किया गया है। इनकी कहानियों में समाज के अधिकांश वर्गों के पात्रों द्वारा उनके संघर्ष तथा जिजीविषा की कहानी है। "अमरकान्त ने विशेषतया कस्बाई मध्यवर्गीय परिवार की विविध समस्याओं, आकांक्षाओं और क्रियाकलापों का बहुत जीवंत विधान किया है। उसके बीचोबीच में निम्न वर्ग की दुनिया भी आती रहती है।"[128] मध्यवर्गीय परिवेश में रह रहे परिवारों के स्वभाव का, इसकी विसंगतियों और विडम्बनाओं का बड़ा सटीक और यथार्थपरक चित्रण अमरकान्त की कहानियों में हमें दिखाई देता है। मध्यवर्ग का कोई भी हिस्सा उनसे छूटा नहीं है। सारे संबंधों को वे अलग-अलग कहानियों में एक-एक करके उठाते हैं।

## वर्गीय आधार पर अमरकान्त की कहानियों का पात्र विश्लेशण

वर्ग के निर्माण में व्यक्तियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि विशिष्ट व्यक्तियों की प्रवृत्तियों और उनकी सामाजिक और आर्थिक धारणाओं के अनुसार उनका विशिष्ट वर्ग बनता है। किसी भी विशेष वर्ग के व्यक्ति का स्तर उसकी आय, संपत्ति, जीविका, रहन-सहन का स्तर, शिक्षा, उसकी व्यक्तिगत शक्ति जिसके आधार पर वह समाज के अन्य व्यक्तियों के बीच अपनी एक विशिष्ट स्थिति का निर्माण करता है। 'वर्ग-संघर्ष' के सिद्धांत के प्रतिपादन का श्रेय मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स को जाता है। मार्क्स ने प्रमुख रूप से तीन वर्गो की कल्पना की है। पहले वर्ग को अभिजात्य वर्ग, दूसरे को मध्यम (बुर्जुआ) वर्ग कहा तथा तीसरे को 'प्रोलेटेरियट' या शोषित वर्ग की

[128] 'पक्षधर' यथार्थ के रचनाकार, विष्णुचन्द्र शर्मा, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन 2006 पृष्ठ–159

संज्ञा दी। इस प्रकार वर्तमान समाज आर्थिक दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त है– उच्च वर्ग, मध्यम तथा निम्न वर्ग। अमरकान्त की कहानियों में हमें इन तीनों ही वर्गों के पात्र देखने को मिलते हैं। अमरकान्त ने इन पात्रों का निर्माण इतनी सहजता से किया है कि पात्रों के अनूठे व्यवहार से ही पाठकों को उनकी स्थिति एवं उस समय की व्यवस्था का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है। अमरकान्त ने अपनी कहानियों में तीनों वर्गों के पात्र लिये हैं, परन्तु उन्होंने मुख्य रूप से निम्न मध्यवर्ग के चरित्रों को लिया है। खगेन्द्र ठाकुर लिखते हैं कि– ''अमरकान्त का साहित्य आधार है–निम्न मध्यवर्ग। निम्न मध्यवर्ग यानी हमारे समाज का एक ऐसा तबका जिसके पास जीने के साधन जरूरत से कम होते हैं। अमरकान्त उनके जीवन के ऐसे अनुभवों को चुनते और प्रस्तुत करते हैं कि पूरे वर्ग की पूरे समाज की व्यथा व्यक्त हो जाती है।''[129] इन वर्गों के पात्रों के सघंर्ष एवं मनः स्थितियों को अमरकान्त ने अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है।

## उच्च वर्ग के पात्र

उच्च वर्ग समाज का वह छोटा समूह है जिसके पास आर्थिक समृद्धि होती है। आर्थिक रूप से संपन्न उच्च वर्गीय व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं का भोक्ता होता है। इनके जीवन में आर्थिक अभाव न होने के कारण भुखमरी, कुपोषण तथा रोगग्रस्तता जैसी समस्याएँ नहीं आती हैं। जिससे यह शब्द उन्हें किताबी लगते हैं। आर्थिक अभावों की अनुभूति न होने से दुःख के अनुभव से परे रहते हैं। उच्चता का दंभी यह वर्ग समाज में अनेक रूपों में छाया रहता है, और निम्न वर्ग व मध्य वर्ग का शोषण करता रहता है। अमरकान्त की 'इण्टरव्यू' कहानी में कलेक्टर तथा राशनिंग ऑफीसर उच्च

---

[129] आलोचना, सम्पादक– नामवर सिंह, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन जन-मार्च 2014, पृष्ठ–48

वर्गीय पात्र हैं, जो नौकरी के लिए इण्टरव्यू देने आये मध्य व निम्न वर्गीय पात्रों के साथ इण्टरव्यू के नाम पर मज़ाक करते हैं।

'पलाश के फूल' कहानी में नवल किशोर राय व हृदय नारायण उच्च वर्ग के ही पात्र हैं। राय साहब बहुत ही भ्रष्ट चरित्र के व्यक्ति हैं। वह अपने गाँव की लड़की पर गंदी नजर रखते हैं और उसका फायदा उठाना चाहते हैं। वह स्वयं नवल किशोर को बताते हैं, कि जब खुदसे उनकी दाल नहीं गली तो वह उस लड़की (अंजोरिया) के पिता की पिटाई करवा देते हैं वह बताते हैं–

"हमारे देहातों में यह आम रिवाज था। जब बाबू लोगों को किसी गरीब की बहू-बेटी पसन्द आ जाती तो वे उसको तंग-परेशान करते, मारते-पीटते, खेतों से बेदखल कर देते और सफलता न मिलने पर बुरी तरह पिटवा देते। फिर रात में घुसकर या किसी दूसरे तरीके से उल्लू सीधा करते। यह बहुत ही कारगर तरीका समझा जाता। मैंने भी सभी फन इस्तेमाल किये।"[130] इससे यह साफ पता चलता है कि उच्च वर्ग के लोग अपना काम पूर्ण करने के लिए गरीब असहाय लोगों पर शारीरिक अत्याचार करने से भी नहीं चूकते। इसी प्रकार 'एक बाढ़ कथा' के उच्चवर्गीय पात्र शहर के धनाढ्य नेता तथा अफसर बाढ़ पीड़ितों को देखकर मनोरंजन करते हैं। उच्च वर्ग को दूसरों की पीड़ा में आनंद की प्राप्ति होती है। वहीं अगर स्वयं को थोड़ा सा भी दुख हो तो वह समाज के अन्य लोगों को परेशान कर देते हैं। 'श्वान गाथा' में सिलदास उच्च वर्ग का पात्र हैं। एक कुत्ते द्वारा सिलदास के पुत्र कमलदास को काटे जाने पर संपूर्ण नगर के कुत्तों को मौत की सजा सुना दी जाती है। उच्च वर्ग के लोग आर्थिक संपन्नता के

[130] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–118-119

कारण भोग-विलास की प्रवृत्ति के होते है। वह गरीब घर की महिलाओं को अपने निजी स्वार्थ हेतु उपयोग करते हैं। 'मूस' कहानी में बन्ने खाँ बीड़ी वाले तथा ट्रकवाले चौबे जी इसी श्रेणी में आते हैं। यह निम्न वर्ग की औरतों की आबरू को चंद रूपयों में खरीदते हैं। उच्च वर्ग के लोग मध्य व निम्न वर्ग के लोगों से आसानी से भेंट नहीं करते हैं, क्योंकि इससे उनकी उच्चता का भान होता है। 'आमंत्रण' कहानी में समाज के कुछ जिम्मेदार नागरिक एक सार्वजनिक आयोजन हेतु जमींदार-राजनेता जयमंगल सिंह से मिलने जाते हैं, तो बार-बार संदेश भिजवाने पर काफी इंतजार के बाद जयमगंल सिंह से भेंट हो पाती है। इसी प्रकार 'दर्पण' कहानी में राजनेता कुलदीप भारती भी विधवा बुढ़िया व रामधन से आसानी से नहीं मिलते। उच्च वर्गीय पात्र धर्म की आड़ में भी निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं। 'बउरैया कोदो' के वकील साहब समाज की तमाम जागरूक संस्थाओं के अध्यक्ष हैं जोकि धर्म की आड़ लेकर समाज का शोषण करते हैं।

**मध्य वर्ग के पात्र**

मध्य वर्ग के पात्र उच्च तथा निम्न वर्ग की अपेक्षा अधिक व्यापक, सवेंदनशील तथा अपनी विशिष्ट दुर्बलताओं से ग्रस्त होते हैं। मध्य वर्गीय व्यक्ति विषम आर्थिक परिस्थितियों के साथ ही राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं से आक्रांत रहता है। यह वर्ग परिवर्तन के लिए व्याकुल असंतोष, आक्रोश, विवशता और घुटन में जीता है। वहीं दूसरी ओर ''इस वर्ग में आत्म निर्भरता तथा जीवन की परिस्थितियों के साथ संघर्ष करने की अद्भुत क्षमता रहती है।''[131] अमरकान्त ने अपनी कहानियों में इस वर्ग के ऐसे पात्रों का चित्रण किया है, जो अपने ही वर्ग के लोगों का शोषण करते दिखाई देते

[131] हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, मंजुलता सिंह, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–6

हैं। 'गले की जंजीर' में श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति को सहायक संपादक शर्मा जी, जोसेफ, परेश बनर्जी, रामविलास तथा मैनेजर आदि के माध्यम से व्यक्त किया है।

'सपूत' कहानी में शिवप्रकाश के माध्यम से पत्रकारिता में आ रही गिरावट को तथा 'छिपकली' कहानी के अजय मिश्र, रामजीलाल, कमल तथा सिल के द्वारा पत्रकारिता से जुड़े प्रेसवालों के जीवन को चित्रित किया है कि किस प्रकार एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा के चलते परिश्रम करते हैं। वह काम न पसंद होने पर भी मेहनत से कार्य करते हैं और अपने सहकर्मियों को नीचा दिखाने की चेष्टा करते है जिसका लाभ मालिक उठाता है। कहानी से एक उदाहरण दृष्टव्य है–''मालिक जान बूझकर कभी एक के पुट्‌टे पर हाथ रखते और कभी दूसरे के, क्योंकि वह जानते थे कि एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए वे खच्चर की तरह परिश्रम करते हुए एक दूसरे की नीचताओं पर पर्याप्त अकुंश भी लगाये रखेंगे।''[132] 'सफर' कहानी में लेखक ने गौरी बाबू और भृगुनाथ के द्वारा राजनेताओं के छद्‌म रिश्ते के खोखलेपन को दर्शाया है।

राजनीति से जुड़े ये व्यक्ति समाज में परस्पर विरोधी की तरह रहते हैं और अन्य जगहों पर एक जुट होने की भावना को प्रकट करते हैं। साहित्यकार समाज का पथ प्रदर्शक होता है, परंतु इनके आपसी संबंध मतलब से भरे हुए तथा आवरणयुक्त होते हैं। इस बात को अमरकान्त ने 'मैत्री' कहानी के सुनील और शिव कुमार के माध्यम से समझाया है। शिल अपनी योग्यता जानते हुए भी सुनील से 'मनमोहिनी' में निकली एक पोस्ट के लिए सिफारिश कराने हेतु सुनील के पास जाता है। ''भाई 'मनमोहिनी' में एक जगह है। मैंने एप्लाई कर दिया है। सुना है श्यामसुंदर जी से

---

[132] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–227

तुम्हारी बहुत पटती है जरा कह देना होगा उनसे। यह बहुत जरूरी कार्य है, सुनील भाई, इसको करना ही पड़ेगा।''[133] कहानी में एक स्थान पर सुनील, सिल के असभ्यतापूर्ण व्यवहार और उसके स्वार्थ से भरे मैत्री संबंधों के बारे में स्वयं ही सोचता है। ''वह शुरू से अब तक भारी शराफत से पेश आया था, जिसका सिल कुमार ने दुरूपयोग किया। वह उसको क्यों बर्दाश्त करे जो अयोग्यता, दूसरों की भावनाओं का आदर करने की असमर्थता और हवाई महत्वाकांक्षा पर आधारित थी? अनिच्छित दोस्ती और आत्मीयता से बड़ा अन्याय क्या हो सकता है? उसका हृदय एक गहरे विक्षोभ, वितृष्णा और अपमान से भर गया।''[134] इसी प्रकार समाज में किस तरह साहित्यकार एवं छोटे लेखकों का शोषण होता है इस स्थिति को 'चाँद' कहानी के राकेश नामक पात्र के द्वारा दर्शाया है। 'मुलाकात' कहानी में भी कुसुमाकर व प्रो0 प्रथमेश सिन्हा द्वारा शोषण की एक अन्य ही स्थिति को दिखाया गया है, किस प्रकार पूँजीपति व्यक्ति एक गरीब व्यक्ति को आगे नहीं बढ़ने देता है। 'घर' में भी दिखाया गया है कि प्रकाशक राम सिंह शोषण करते हैं। 'कलाप्रेमी' कहानी में अमरकान्त ने सुमेर, मिसेज रंजन, सुबोध राय तथा नाथ नरहरी के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज में कला संघों के नाम से व्याप्त राजनीति को दर्शाया है। साथ ही मध्यवर्गीय पात्रों के विभिन्न गुणों से परिचित किया है। कहानी का ही एक पात्र–''नाथ लोगों को पटाने में बड़ा उस्ताद था। वह देखते ही झट से समझ जाता कि कौन उसके लिए उपयोगी है और कौन नहीं और जैसा व्यक्ति रहता था उसी के अनुसार वह उसको डोज दे दिया करता

---

[133] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ–191

[134] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ–190

था।''[135]

अक्सर ऐसे व्यक्ति हमारे समाज में मिल जाते हैं जो अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए लोगों से मेल मिलाप करते हैं। ये व्यक्ति अपने-अपने मतलब हेतु ही सामने वाले व्यक्ति से बातें करते हैं। मध्यवर्गीय समाज में एसे चरित्र काफी संख्या में हैं। इन कहानियों के माध्यम से अमरकान्त ने मध्यवर्गीय महिला पात्रों के विविध रूपों का अत्यंत सूक्ष्म एवं विस्तृत चित्रण किया है।

## निम्न वर्ग के पात्र

अमरकान्त ने अपनी कहानियों में निम्नवर्ग के पात्रों के माध्यम से इनकी समस्याओं का कुशलता से चित्रण किया है। डॉ0 आभा त्रिपाठी लिखती हैं कि–''अमरकान्त ने निम्न मध्यवर्गीय जीवन की परेशानियों अंतर्विरोधों, सपनों, आकांक्षाओं का खाँका खींच कर कहानी को नई संवेदनात्मक भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया। उनकी कहानियों के पात्र इतने जीवंत हैं कि वे अपने निकट परिवेश से और भी अधिक भलीभाँति परिचित दिखाई देते हैं। ये पात्र नियति का साक्षात्कार करते, जीवन के लिए तिल-तिल मरते और मरने के लिए तिलतिल जीते, बेबसी और करूणा को ह्रदय में छिपाये, रोते, सिसकते, कलपते, संघर्ष करते और दूसरों के लिए जीते दिखाई देते हैं।''[136] अमरकान्त के पात्र संघर्षों भरा जीवन जीते हुए भी जीवन की इच्छा नहीं छोड़ते हैं। 'रजुआ' पात्र 'ज़िंदगी और जोंक' नामक कहानी का ऐसा ही पात्र है, जो अपनी दैनिक आवश्यकता के लिए मोहल्ले के लोगों पर निर्भर है। इस कारण वह

---

[135] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–425–26

[136] हिन्दुस्तानी, सम्पादक– सुनील जोगी, अंक–4, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण अक्टूबर-दिसम्बर 2014, पृष्ठ–424

किसी एक व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पूरे मोहल्ले का नौकर बन जाता है। मोहल्ले के तथाकथित पढ़े लिखे सभ्य लोग अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार रजुआ का शोषण करते हैं। सारा मुहल्ला उससे काम कराना अपना अधिकार समझता है और जरा सी कोताही होने पर लानत-मलानत ही उसके हिस्से आती है। इसकी एक बानगी अमरकान्त के ही शब्दों में देखी जा सकती है। ''जंगी ने पहला काम यह किया कि दो थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिये, फिर गरजकर बोला, सुअर धोखा देता है? कह देता नहीं आऊँगा। अब आज मैं तुझसे दिन भर काम कराऊँगा, देखें कौन साला रोकता है। आखिर हम भी मुहल्ले में रहते हैं कि नहीं।''[137] निम्न वर्गीय पात्र अपनी वर्गीय परिधि को तोड़ने का प्रयास तो करते हैं, परन्तु पूँजीवादियों द्वारा बनाई व्यवस्था में वह छटपटा कर ही रह जाते है और चाह कर भी बाहर नहीं निकल पाते हैं। हमारे समाज में घरेलू नौकरों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। अमरकान्त ने अपनी कहानियों में ऐसे कई पात्रों की सर्जना की है जो इनकी बदतर हालत एवं समस्याओं को उजागर करती है। 'बहादुर' कहानी का पात्र दिलबहादुर बारह-तेरह वर्षीय लड़का है, जो घर में काम करता है। थोड़ी सी भी गलती हो जाने पर मालिक के क्रोध का शिकार हो जाता है। इसी प्रकार एक अन्य पात्र है 'नौकर' कहानी का जंतु। जंतु की स्थिति उसके नाम के अनुरूप किसी पशु से कम नहीं है, बल्कि उससे भी बदतर है। जंतु के बीमार पड़ने पर कोई उससे सहानुभूति नहीं रखता, बल्कि उससे भला-बुरा कहते हैं। अमरकान्त ने इन पात्रों के माध्यम से इनकी विवशता का चित्रण किया है। यह पात्र अपनी मजबूरियों एवं जरूरतों के कारण ऐसा व्यवहार सहन करते हैं। अमरकान्त ने इन पात्रों की सर्जना करके हमारे समाज का घृणित रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। क्षमा, दया, उदारता

[137] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–134

तथा सदाशयता के नाम पर निम्नवर्गीय लोगों को समाज में ठगा जाता है। 'निर्वासित' कहानी का बनिया गंगू पात्र को अपने घर ले आता है, वह उससे खूब काम करवाता है। एक दिन गंगू आवश्यकता के चलते जब बनिया से कुछ पैसे माँगता है तो बनिया आग बबूला हो जाता है। वह चिल्लाकर गंगू से कहता है–"अब तेरे पर जमने लगे! तू भूल गया कि मैं तुझे शमशान घाट से उठाकर लाया था? अब तक तुझ पर हजारों रूपए खर्च कर चुका हूँ। इसीलिए कहा गया है कि नीचों के साथ अहसान नहीं करना चाहिए।"[138] इससे स्पष्ट है कि हमारे समाज में लोग अपने स्वार्थ के लिए गंगू जैसे पात्रों का शोषण करते हैं। ग्रामीण गरीब किसानों की स्थिति को व्यक्त करने के लिए अमरकान्त ने 'पलाश के फूल' में भुलई पात्र का आश्रय लिया है।

किसान की खेती जब सूखा-ओला या बाढ़ से नष्ट हो जाती है तो वह मजदूर हो जाता है। 'मूस' कहानी का मूस पहले किसान रहता है बाद में शहर आकर मजदूर बन जाता है। समाज में मजदूर वर्ग की स्थिति भी बड़ी दयनीय है। उनको अपनी रोजी रोटी कमाने हेतु शहरों का रूख करना पड़ता है। एक मजदूर व्यक्ति रोज कमाने एवं रोज खाने की स्थिति से भी गुजरता है।

'कुहासा' में गाँव के झींगुर का लड़का दूबर शहर आकर रोजी रोटी हेतु अनेक माध्यम अपनाता है। 'जन्मकुण्डली' का भैयालाल भी गाँव से शहर मजदूरी करने आया पात्र है। समाज में परंपरागत आय के स्त्रोत खत्म होने से अनेक लोग मजदूरी को अपनी अजीविका का साधन बनाते हैं। 'दलील' का रिक्शेवाला जन्म से गोसाईं ब्राह्मण है, किंतु अजीविका स्त्रोत भिक्षा बंद हो जाने से रिक्शा चलाकर अपना पेट पालता है। 'लोक-परलोक' का मजदूर अकबर जब मजदूरी आसानी से नहीं कर पाता तो अपना

[138] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–23

धर्म बदलकर बालचन्द्र आर्य बनकर मजदूरी करता है। निम्नवर्गीय समाज में फैली बेकारी की भयावहता को 'इंटरव्यू' कहानी के बेरोजगार पात्रों एवं 'मकान' के मनोहर के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। 'घर' कहानी में विनय के माध्यम से निम्नवर्गीय युवाओं की पारिवारिक कठिनाइयों को तथा 'कबड्डी' में लंगड़ा व पहलवान के माध्यम से निम्न वर्ग का अपने देशी खेलों के प्रति प्रेम दिखाया है। निम्नवर्गीय समाज की स्त्रियाँ दिन-रात पुरूष के कंधे से कंधा लगाकर मेहनत करती हैं। 'मूस' कहानी की परवतिया व मुनरी संघर्ष की मूर्ति है तथा 'हत्यारे' की 'औरत' व 'पलाश के फूल' की अंजोरिया शोषण की प्रतीक है। 'निर्वासित' में गंगू की पत्नी जीवटता के साथ श्रम करके परिवार को पालती है। 'दर्पण' कहानी की बुजुर्ग महिला पात्र अपने पुत्र की नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खाती फिरती है। इसके अतिरिक्त 'जिंदगी और जोंक' की पगली समाज द्वारा सताई हुई पात्र है। इन नारी पात्रों के माध्यम से अमरकान्त ने दिखाया है कि निन्न वर्गीय महिला जीवन की सभी कठिनाइयों का सामना साहस के साथ करती है। वह किसी स्थिति से पलायन नहीं करती। इसी प्रकार 'दो चरित्र' का भिखमंगा लड़का, 'बउरैया कोदों' के धोबी-धोबिन, 'एक बाढ़ कथा' के गंदी बस्तियों के निवासी तथा 'चाँद' कहानी का कॉफी हाउस बेयरा निम्न वर्गीय पात्र है। ये सभी पात्र निरीह, कातर और असहाय हो उठे हैं। ये निम्नवर्ग के ऐसे विवश एवं निरीह चरित्र हैं, जिनके माध्यम से अमरकान्त ने समाज के मजबूर, बेबस पात्रों की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि अमरकान्त की कहानियों में उच्चवर्गीय पात्रों की अपेक्षा मध्यवर्ग व निम्न वर्ग के पात्रों की संख्या अधिक है। मध्यवर्ग तथा निम्न मध्यवर्ग के पात्रों के प्रति अमरकान्त की अधिक सहानुभूति है। इनकी कहानियों में मध्य व निम्न वर्ग के पात्रों की समस्याओं पर अधिक बल दिया गया है।

## अमरकान्त की कहानियों में वर्गीय चिंतन

अमरकान्त सामाजिक यथार्थ और मानवीय सवेंदनाओं के कुशल चितेरे हैं। उन्होनें अपनी कहानियों में वर्गगत और जातिगत सामाजिक यथार्थ को बहुत ही सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। एक आदर्श समाज में इस तरह का विभाजन का कोई स्तंभ नहीं होता तथापि वर्गगत अंतर समाज का कटु यथार्थ है। अमरकान्त ने अपनी कहानियों का कथ्य सभी वर्गो से लिया है, परंतु मुख्य रूप से उन्होंने मध्यवर्ग की समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। ''अमरकान्त ने निम्नमध्यवर्गीय जीवन की परेशानियो, अंतर्विरोधो, सपनों, आकांक्षाओं का खांका खींच कर कहानी को नई संवेदनात्मक भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया।''[139]

अमरकान्त ने अपनी कहानियों में अन्य वर्गों की अपेक्षाकृत मध्यवर्गीय पात्रों एवं परिवेश को अधिक शामिल किया है। इसका एक कारण यह है कि अमरकान्त का मध्यवर्ग से जुड़ा अनुभव क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विस्तृत है। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग अपनी समस्त अभावजन्य पीड़ा, वैचारिक अंतर्विरोध, चारित्रिक विसंगति और नैतिक बोध की असंगतियों के साथ उपस्थित हुआ है।

मध्यवर्ग के साथ-साथ निम्न वर्ग या दलित-उपेक्षित, हाशिये पर स्थित समाज भी बड़ी विश्वसनीयता के साथ अमरकान्त की कहानियों में विद्यमान है। वे भारतीय निम्न मध्यवर्गीय मनुष्य की भावनाओं को जितना समझते और आदर करते हैं उतना ही उसके अंतर्विरोधों को भी तीखे व्यंग्यात्मक ढंग से व्यक्त करते हैं। ''उनकी सहानुभूति प्रधान रूप से समाज के निचले तबके के साथ है जिसे वे उच्चवर्ग की तुलना में हमेशा

[139] हिन्दुस्तानी, सम्पादक– सुनील जोगी, अंक-4, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण अक्टूबर-दिसम्बर 2014, पृष्ठ–73

ज्यादा मानवीय, दयाद्र, निरीह, साहसपूर्व और सरल पाते हैं।"[140] यही कारण है कि उनकी कहानियों में मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग व्यापक रूप से मौजूद है। मध्यवर्ग से जुड़ी समस्याएँ, अमरकान्त की कहानियों में चिंतन का विषय है।

बेरोजगारी की समस्या को दर्शाती हुई अमरकान्त की पहली कहानी 'इटंरव्यू' आज भी प्रासंगिक है। स्वातंत्र्योत्तर युग के युवा वर्ग में जो उत्साह था यह कहानी उन युवकों के मोहभंग को चित्रित करती है। राशनिंग विभाग में 60 रूपये की क्लर्की के लिए होने वाले इटंरव्यू का बेहद सुदंर चित्रण इस कहानी में हुआ है। इंटरव्यू देने आये युवाओं की चर्चा करते हुए अमरकान्त ने तत्कालीन समाज का पूरा चित्र खींच दिया है। पहली श्रेणी में ऐसे लोग थे जिनकी योग्यता अधिक से अधिक इण्टमीडिएट तक की थी। उनकी पढ़ाई एक-दो साल पहले ही छूट चुकी थी। इनके अतिरिक्त छोटे-मोटे प्रेसों में तीन-चार मील पैदल आने-जाने वाले क्लर्क थे। दूसरी श्रेणी में बेचलतू वकील, होम्योपैथ डॉक्टर, वैद्य तथा हकीम थे। तीसरी श्रेणी में कुछ ऐसे खानदानी विद्यार्थी थे जिनकी आर्थिक स्थिति तेजी से बिगड़ रही थी और उनके घर वालों ने उन्हें यहाँ जबरदस्ती भेजा था। अमरकान्त ने इन तीनों वर्गों के माध्यम से आजादी के बाद की जो स्थिति दर्शायी है, उससे नौजवानों में बेहद तकलीफदेह स्थिति का पता चलता है। यही नौजवान 'दोपहर का भोजन' में भी नौकरी ढूंढ रहा है और 'डिप्टी-कलक्टरी' में डिप्टी कलक्टर बनने के सपने बुन रहा है। इटरंव्यू पूरी तरह संपन्न भी नहीं हुआ था, कि उससे पहले ही रिक्त पद के लिए चयन कर लिए जाने की घोषणा कर दी। इस कारण इटरंव्यू से वंचित लोगों ने साफ तौर पर यह समझ लिया कि पहले से ही किसी का लिया जाना तय था। वहाँ उपस्थित लोगों के स्वर में कहीं रोष था, तो कहीं

[140] आज की कहानी, विजय मोहन सिंह, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ—422

निराशा थी। कहानी में एक संवाद इस प्रकार है–

"राशनिंग डिपार्टमेंट तो भ्रष्टाचार का अड्डा है।"

एक ने खुशी प्रकट की, "चलो अच्छा हुआ कि नहीं लिये गये।"

"मंत्री तक खाने लगे हैं, फिर छोटे-मोटे अफसरों की क्या बात।"[141]

उपर्युक्त वाक्य आज़ादी के सपने के टूटने की घोषणा करते हैं ऐसा लगता है कि जैसे यह सब-कुछ आज की किसी कहानी का हिस्सा है। मध्य वर्ग के परिवारों की संख्या हमारे समाज में सर्वाधिक है और इस समाज में कर्म और फल के अनुचित संबंधों में जीवन की तलाश करता हुआ वह उपेक्षा का शिकार होता है। यह आतुरता सिर्फ शकलदीप बाबू, "गगन बिहारी' के पिता या 'बढ़ते-पौधे' कहानी में समस्याओं को झेलते पिता की ही नहीं हैं। उनके यहाँ तो पिता-पुत्र संबंधों में फिर भी शक है, चिंता है और उम्मीद भी है, लेकिन नौजवानों की समस्या शॉर्टकट के रास्ते पर चलते हुए सबसे आगे निकल जाने की है। स्थितियाँ इतनी विकट हैं कि जिस विद्यार्थी वर्ग से सर्वाधिक सहानुभूति थी वही हत्यारे के रूप में दिखाई देता है। जब पढ़ाई, मेहनत और योग्यता का कोई मतलब नहीं रह जाएगा और आसान रास्ते से लोग धनार्जन करने लगेंगे तो ऐसी स्थितियाँ आएँगी ही।

'हत्यारे' कर्म और फल के अनुचित संबंध में तर्कहीन समाज के छात्र हैं। यह कहानी उन भटकी हुई पीढ़ी का कच्चा चिट्ठा खोलती है जो आदर्शों की धज्जी उड़ाते हैं साथ ही किसी अन्य के दुख तकलीफों पर हँसते हैं। "यह कहानी उस समय की भयानक दुर्घटना की गवाह भी है जिसमें जीवन के आदर्शों व मूल्यों का निरंतर क्षरण

---

[141] अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग–1, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ–20

और हत्या की जा रही है।

साधारण आदमी जिन पर भरोसा करता है चाहे वह बुद्धिजीवी हो सामाजिक कार्यकर्ता या फिर राजनेता सब अपकर्मों में लिप्त हैं, उनके विश्वास को नंगा करते हैं। अन्ततोगत्त्वा यह होता है कि ऐसी पीढ़ी जन्म लेती है जिनका किसी से कोई रिश्ता नहीं रहता।''[142] कहानी में जो हत्यारे हैं वास्तव में वे हत्यारे नहीं हैं असली हत्यारे तो वे हैं जो नई पीढ़ी को हत्यारे बना रहे हैं।

'नौकर' एक मार्मिक कहानी है। एक मध्यवर्ग का मजबूर व्यक्ति जो नौकर है मामूली सी तनख्वाह पर वह नौकर दिन रात हाड़तोड कर मेहनत करता है। अंततः वह बीमार पड़ जाता है। थक हार कर वह लेट जाता है, उसका बदन दर्द से टूटने लगता है। वह सपने में रेगिस्तान देखता है। उसे प्यास लगती है किंतु वह उठकर पानी पी सके इतनी शक्ति नहीं है उसमें। वह चुपचाप पड़ा रहता है कि तभी मालिक गरजता हुआ उसे गालियाँ देने लगता है साथ ही पानी भर कर लाने को कहता है। उसका सपना टूट जाता है वह झटके से उठता है और बाल्टियाँ लेकर पानी लेने दौड़ पड़ता है। नौकर होना हमारे समाज में क्या है इसको बेहद करूणार्द ढंग से हमारे सम्मुख अमरकान्त अपनी कहानी के माध्यम प्रस्तुत करते है।

इसी क्रम में 'कुहासा' कहानी भी गाँव से आये एक भोले-भाले लड़के की है जो शहर आता है। शहर के बीच अपने सीधेपन से लूट लिया जाता है। शहर के छल-छंद और चतुरता से छला जाता है। अंत में अपने कंबल को सस्ते दाम में बेचकर वह ठंड से ठिठुरता हुआ जान गवाँ देता है। अमरकान्त ने विशेषतया कस्बाई मध्यवर्गीय परिवार

---

[142] हिन्दुस्तानी, सम्पादक–सुनील जोगी, अंक–4, अक्टूबर-दिसम्बर 2014, अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण पृष्ठ–130

की विविध समस्याओ, आकांक्षाओं, सबंधों और क्रियाकलापों का बहुत जीवंत विधान किया है। इसी कड़ी में 'जिंदगी और जोकं' रजुआ जैसे अनाथ लड़के की नारकीय ज़िंदगी की कथा है फिर भी इस जीवन के प्रति लेखक ने रजुआ का जो मोह दिखाया है वह देखते बनता है। साथ ही कहानी में कुछ अन्य पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय चालाकियों से अवगत होते हैं। वह अभाव भोगती ही नहीं हैं, बल्कि घर में एक सेतु बनी रहती है और सभी अपने उस अभाव को काटना चाहते हैं।

अमरकान्त की 'हौसला' कहानी मध्यवर्गीय महिला के हौसले की सीमाएँ और संभावनाएँ इस कहानी में दिखती है। यद्यपि देखा जाए तो उमा के जीवन में किसी का भी सहयोग नहीं मिला है और उसका सारा संघर्ष एकाकी रहा है। न तो माँ बाप का सहयोग, न पति का, और अंत में न ही बेटियों का सहयोग मिला उसे। ''हौसला एक उमा का नहीं है, बल्कि सारे मध्यवर्ग का है। इस हौसले के बगैर मध्यवर्ग का अस्तित्व ही शायद संभव न हो।''[143]

'वह हंसी' मध्यवर्गीय व्यक्ति की विवशता, आजादी के बाद के भारत में मूल्यों का पतन किस तरह हो रहा है, इस ओर इशारा करती है। कहानी का कथानायक किस प्रकार विवशता से भरी हंसी हंसता है यह दिखाया है। ''महेश दर्पण लिखते है कि–''कठिन होते जा रहे जीवन के बीच भी अपने संस्कारों की जिद की राह थामे कथा नायक अपनी एक हंसी को नहीं भुला पाता। यह हंसी उस बेटे की मृत्यु का समाचार पाने पर हंसनी पड़ी थी। यह विवशता भरी हंसी है, जो वह खुद पर हंसता

---

143 'पक्षधर' यथार्थ के रचनाकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण विष्णुचन्द्र शर्मा, पृष्ठ–193

है।''[144]

अमरकान्त की कहानियों में मानवता की बात कही गई है किंतु वास्तव में यह भावना निम्नवर्ग के पात्रों में मध्यवर्ग के पात्रों की तुलना में कहीं ज्यादा है। अमरकान्त की 'विजेता' कहानी में ऐसे ही पात्र हैं। इस कहानी में विजेता अपने मित्र के साथ तो धोखा करता ही है साथ ही एक सीधी-सादी स्त्री की गृहस्थी बिगाड़कर उसे अपनी वासना का शिकार बनाया तथा मिथ्या प्रेमजाल में फंसाकर उसकी जिंदगी बिगाड़ दी। विश्वनाथ त्रिपाठी ने ठीक ही कहा है–

''नैतिकता का पालन उदारता नहीं यानि उसका पालन करने से दूसरों का ही हित सुरक्षित नहीं होता, अपना भी होता है। हम जो कुटिलता दूसरों से करते है, वह कुटिलता कल कोई हमसे या हमारे बच्चों से भी कर सकता है। फिर मनुष्य के मन में शेष सभी अन्य प्राणियों के सुख-दुख बनाने की प्रवृत्ति मौजूद होती है। हम केवल दूसरों के कार्यों पर ही निर्णय नहीं देते, अपने पर भी निर्णय देते हैं।''[145]

## अमरकान्त की कहानियों में स्त्री की उपस्थिति

किसी सामाजिक प्रगति या नये समाज के निर्माण में इनका परस्पर स्वैच्छिक, मनपसंद सहयोग एवं सहभागिता जरूरी है परंतु आज भी भारतीय समाज में शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, जनतांत्रिक अधिकार, सुरक्षा, न्याय आदि के मामलों में स्त्रियों की अधिकार–प्राप्ति वांछित अनुपात से बहुत कम हैं, अतः दोनों के परस्पर संबंधों के संदर्भ में अमूमन स्त्रियों के विरुद्ध इतना असंतुलन, जोर–जबर्दस्ती, पाखंड, उत्पीड़न, अन्याय

---

[144] आजकल सम्पादक– राजेन्द्र भट्ट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण अप्रैल–2014, पृष्ठ–6

[145] अमरकान्त एक मूल्यांकन, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण पृष्ठ–145-146

तथा हिंसा है।

अमरकान्त के लेखन का दायरा निम्नमध्यवर्ग और मध्यवर्ग की समस्याओं के आसपास केन्द्रित रहा है। इस समाज की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को अमरकान्त ने व्यापक विस्तार के साथ चित्रित किया है। अमरकान्त के कथा–साहित्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, उनका शोषण, आर्थिक परिस्थितियों के दबाव में स्त्री–पुरुष संबंधों का बिखराव, प्रेम संबंधों में स्त्री की स्थिति और पवित्र संबंधों की आड़ में उसके शारीरिक शोषण जैसी बातों को देखा जा सकता है।

आजादी के बाद भारतीय नागर समाज का मध्यमवर्ग काफी हद तक लड़कियों को पढ़ाने और नौकरी कराने जैसी स्थितियों को स्वीकार कर चुका था, पर ग्रामीण समाज में ऐसी स्थितियां उतनी स्वीकार्य नहीं थीं। आधुनिकता और फैशन की चकाचौंध से भी ग्रामीण स्त्रियां दूर थीं। आर्थिक रूप से संपन्न परिवारों में भी परंपरागत सामंती मानसिकता बरकरार थी। ऐसे में एक विचित्र सामाजिक स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। पुरुष पढ़–लिखकर अपने आप को आधुनिक समझने लगे थे। वे अपने लिए शहर की पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों वाली आदर्श नायिका की इच्छा रखते थे जबकि उनकी पारिवारिक जड़ें सुदूर ग्रामीण अंचलों में परंपराओं, आदर्शों और रूढ़ियों में जकड़ी थीं। अपनी जड़ों से कटकर अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीने की हिम्मत पुरुष पात्रों में नहीं थी। यही कारण है कि ये पात्र चोरी–छुपे प्रेम का प्रपंच तो फैलाते थे पर उसे सामाजिक मान्यता दिलाने की हिम्मत नहीं रखते थे। ऐसे में स्त्रियों को मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार होना पड़ता था। प्रेम की पवित्र भावनाएं झूठी लगने लगतीं। उनकी मानसिक स्थिति एकदम निरीह व्यक्ति की तरह हो जातीं। वह अंदर ही अंदर घुटतीं, सारी सामाजिक मान्यताओं को दोषी मानतीं, पर इन सबको धता बताते हुए वे सामाजिक विद्रोह की तरफ आगे नहीं बढ़ पाती हैं।

विशेषकर मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों की यही स्थिति अमरकान्त के कथा साहित्य में दिखायी पड़ती है। अमरकान्त के निम्नवर्गीय महिला पात्र मध्यवर्गीय महिला पात्रों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, तर्कसंगत और व्यवहारिक प्रतीत होती हैं।

इस तरह अमरकान्त के कथा साहित्य में स्त्री–संबंधी विचार दो संदर्भों में सामने आते हैं। एक उन पात्रों द्वारा जो युवा और पढ़े–लिखे हैं तथा स्त्रियों को भी समान अवसर, शिक्षा और समाज में बराबर का दर्जा देने की बात करते हैं। दूसरी तरफ वे पात्र हैं जो स्त्रियों का सिर्फ शोषण करना चाहते हैं। 'पलाश के फूल' कहानी के रायसाहब की दृष्टि में, 'स्त्री माया है! उसमें शैतान का वास होता है, वही भरमाता, चक्कर खिलाता और नर्क के रास्ते पर ले जाता है। रायसाहब ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि अँजोरिया के साथ लंबे समय तक शारीरिक संबंध स्थापित करने के बाद जब वह साथ रहने (रखैल के रूप में) की बात करती है तो रायसाहब को अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा पर खतरा महसूस होने लगता है।

'मुक्ति' कहानी का मोहन कई वर्षो तक अपनी पत्नी को छोड़कर मधु के साथ संबंध बनाये रखता है, लेकिन ससुर की तरफ से मोटी रकम और जमीन का लालच मिलने के बाद वह मधु को पथ–भ्रष्ट औरत मानते हुए उससे अलग हो जाता है। 'महुआ' कहानी के अनिलेश का मानना था कि "भव सागर में स्त्रियाँ मछलियाँ है और वह मछुआ! वह कहता था कि जाल डालने के लिए बुद्धि और अनुभव की आवश्यकता होती है, बुरे काम के लिए कोई भी स्त्री बुरी नहीं होती और परिश्रम वहीं करना चाहिए जहां सफलता की आशा हो। इसीलिए वह गरीब या मर्द शून्य कुटुम्बों, कमजोर पतियों की बीवियों तथा घरेलू अन्यायों से असन्तुष्ट युवतियों को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाता था।

स्पष्ट है कि अमरकान्त महिलाओं के अधिकारों, सुरक्षा, न्याय, आर्थिक स्वावलंबन

और स्वैच्छिक तथा मनपसंद सहभागिता की बात करते हुए 'स्त्री विमर्श' को लेकर चल रही विचारधारा में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। वैसे भी स्त्री विमर्श पुरूषों के समक्ष स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक समानता हेतु किये जा रहे आंदोलन का ही नाम है। परितोष बैनर्जी इस संबंध में लिखते हैं कि "नारीवाद एक विशिष्ट मतवाद है जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरुष–शासित समाज में निम्न स्थान दिया गया है और पुरुषों के साथ समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। अन्य शब्दों में, नारीवाद उस प्रवृत्ति का द्योतक है जो लिंग पर आधारित पारम्परिक शक्ति–व्यवस्था का पुनर्विन्यास चाहती है।"[146]

**निष्कर्ष–**

वस्तुतः अमरकान्त की कहानियों का लेखन एक प्रतिबद्ध रचनाकार का है जो गहरे सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है। अमरकान्त की वैचारिकता के केंद्र में समाज का मध्यवर्गीय समाज रहा। इस समय के मौलिक चिंतन में हो रहे परिवर्तन, व्यवस्था के प्रति इस वर्ग के अंदर निहित अविश्वास, इनकी दयनीयता और निरीहता के साथ–साथ इनके सामाजिक संबधों में आ रहे बदलाव को भी अमरकान्त अपने साहित्य के माध्यम से पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करते हैं। समय के साथ बदलते हुए सामाजिक मूल्यों पर अमरकान्त की पैनी दृष्टि है। सामाजिक बदलाव से जुड़े हर पक्ष पर विचार करते हुए अमरकान्त किसी एकांकी स्वरूप को सामने लाने से बचते हैं। यह सारी स्थितियाँ अमरकान्त की वैचारिक परिपक्वता को समझने में मदद करती हैं।

---

[146] अमरकान्त एक मूल्यांकन, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण पृष्ठ–145-146